[Chaturvedi *, Vol.6 (Iss.2): February, 2018]
(Received: Jan 19, 2018 - Accepted: Feb 26, 2018)
ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1189297

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

राजस्थान की संस्कृति व उनमें निहित लोकसंगीत

डॉ0 सरस्वती चतुर्वेदी [*1]
[*1] असिस्टेंट प्रोफेसर (संगीत विभाग), चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा

सारांश
'राजस्थान राज्य जैसा कि नाम से ही प्रतीत होता है कि यह राज्य कई रंगों से भरा हुआ राज्य हैं, इस प्रदेश का खान–पान, पहनावा यहाँ की लोकसंस्कृति, लोकवाद्य, लोकगीत, लोकनृत्य तथा लोकनाट्य जनसमुदाय में अत्यन्त रूप से समाहित दिखाई देते है।

लोक शब्द से तात्पर्य
'लोक' शब्द एक बहुत प्राचीन शब्द है 'लोक' शब्द का अर्थ उस जन समाज से लगाया जा सकता है जो गहराई से पृथ्वी पर फैला रहता है। 'लोक' शब्द एक महत्वपूर्ण जन समुदाय की ओर संकेत करता है।

राजस्थान की लोकसंस्कृति में प्रयुक्त लोकगीत
इन लोकगीतों में हमें राजस्थान की लोक संस्कृति के दर्शन होते हैं उनका निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है –

संस्कार सम्बन्धी लोकगीतः– वाधावा, चाक, भारत, जरतजगा, हल्दी, घोड़ी आदि संस्कार सम्बन्धी प्रमुख लोकगीत होते हैं।

नृत्य सम्बन्धी लोकगीतः– त्यौहार–पर्वों पर किये जाने वाले नृत्यों में विभिन्न जातियों द्वारा विभिन्न प्रकार के लोकगीत गाये जाते हैं।

व्यवसायिक जातियों का लोकगीतः– राजस्थान में अनेक जातियाँ अपनी जीविका चलाने के लिये इन लोकगीतों को गाती है।

भील जाति के लोकगीतः– भील जाति के लोगों का जीवन नृत्य, गीतों एवं हास्य विनोद से परिपूर्ण होता हैं।

राजस्थान की लोक संस्कृति को प्रोत्साहन देने में निम्नलिखित संस्थाऐं अत्यधिक योगदान दे रही हैं। उनके नाम है, जवाहर कला केन्द्र जयपुर, पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर आदि। इस प्रकार से हम राजस्थान के लोक संगीत के सन्दर्भ में कह सकते हैं कि इनका भविष्य उज्जवल रहेगा।

मुख्य शब्द – संगीत, लोकसंगीत, राजस्थान

Cite This Article: डॉ0 सरस्वती चतुर्वेदी. (2018). "राजस्थान की संस्कृति व उनमें निहित लोकसंगीत." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 6(2), 197-201. https://doi.org/10.5281/zenodo.1189297.

प्रस्तावना

राजस्थान के नाम से ही यहाँ के साहित्य एवं संस्कृति का ज्ञान व चिन्तन दृष्टिगोचर हो जाता है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक राजस्थान राज्य के साहित्य व संस्कृति का अध्ययन हर मोड पर गहरा प्रभाव डालता रहा है। राजस्थान में लोक संगीत की परम्परा का प्रादुभवि तब से माना जाता है जब से की मनुष्य

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1189297

की जाति विकसित अवस्था में आई। राजस्थान की संस्कृति में यहाँ के लोकगीतों, लोकनृत्यों, लोकवाद्यों तक लोकनाट्यों की समाहितता है। यहाँ का हर व्यक्ति इन्हीं कलाओं के रूप में अपना मनोरंजन तथा जीविकोपार्जन करता है।

राजस्थानी लोक संगीत की परम्परा व उसका प्रभाव आधुनिक काल में पूर्ण दिखाई देता है। लोक संगीत के सरंक्षण, संवर्द्धन एवं विकास में राजस्थान सदैव अग्रणी रहा है। राजस्थानी लोक संगीत अपने आप में बहुत सारी विशेषताओं का एवं विभिन्नताओं से ओतप्रोत दिखाई देता है। राजस्थानी लोकसंगीत सांगीतिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। अतः इस लोक संगीत को लोक समान से अवगत कराना अत्यन्त आवश्यक है।

लोक से तात्पर्य

लोक का साहित्य व संस्कृति

''लोक साहित्य की परम्परा उतनी ही प्राचीन मानी जा सकती है जितनी कि मनुष्य की जाति है। लोक साहित्य में जन संस्कृति का जैसा सच्चा तथा सजीव चित्रण उपलब्ध होता है, वैसा कही भी प्राप्त नहीं होता।'' हमारा भारतवर्ष एक विशाल बहुधर्मी, बहुवर्णी एवं विविध साहित्य तथा संस्कृतियों का राष्ट्र है क्षेत्रफल के विस्तार के साथ–साथ इसमें बसे जनसमुदायों ने अपनी पृथक–पृथक संस्कृतियों का निर्माण किया है। उन्होंने अपने साहित्य एवं संस्कृतियों में अपनी आशाओं, आकांक्षाओं, स्वप्नों, सुख–दुखों, अवस्थाओं तथा विश्वासों की अभिव्यक्ति की है। जहाँ तक लोक साहित्य या लोक संस्कृति के विकास के साथ प्रारम्भ हुआ है। लोक साहित्य में सरलता, सरसता स्वाभाविकता के कारण यह अपना एक विशेष महत्व रखती है। लोक जीवन का सजीव अनपढ और प्राचीनतम माध्यम है जिससे लोक और जीवन में साहित्य में तादाम्य सम्भव होता है। लोक साहित्य और लोक जीवन की पृष्ठभूमि इतनी विस्तृत एवं अर्थगत है, कि लोक जीवन और लोक साहित्य का वर्णन करना असम्भव हो जाता है। इसके पीछे काफी परम्पराएं चली आ रही है। जिसका सम्बन्ध समाज से है।

राज्य की इसी प्रकार की जरूरतों के लिए राष्ट्र के विविध दूरस्थ अंचलों में निवास कर रहे लोगों की लोक संस्कृति का अध्ययन करना आवश्यक है ताकि उनके सामाजिक (आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक) जीवन का पता लगाया जा सके। इस प्रकार लोक साहित्य और लोक संस्कृति का अध्ययन आधुनिक राष्ट्र की औद्योगिक एवं महानगरीय सभ्यता के विकास से है इसीलिए लोक साहित्य, लोक संस्कृति और लोक भावाओं के अध्ययन का प्रारम्भ भी आधुनिक व लोक संस्कृति का अध्ययन भारत में आधुनिक युग की आवश्यकताओं से अस्तित्व में आया और यह ज्ञान एक विशिष्ट अनुशासन माना जाता है।

इसी प्रकार लोक शब्द एवं लोक वार्ता, लोक गीत, लोक जीवन, लोक नृत्य, लोक वाद्य तथा लोक नाट्य के बारे में महान विद्वान ने अपने विचारों को प्रकट किया है, कि लोक शब्द राष्ट्र का अमर स्वरूप तथा मानव मन की सभी प्रकार की भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम है, लोक हमारे नए जीवन का आध्यात्म शास्त्र है। इसका कल्याण ही हमारी मुक्ति का कल्याण द्वार है और निर्माण का नवीन रूप है। लोक शब्द समाज के शिक्षित व्यक्तियों द्वारा बनाया गया और प्रकाशित हुआ।

लोक शब्द को सभी लोगों ने लोक साहित्य सविदेशीय, सर्वकालीन और सर्वसम्मत स्वीकार किया है। इस प्रकार लोक शब्द से जो परम्पराएँ बनी है वह कभी मिटती नहीं है, और न कभी मिटेंगी तथा यह सदैव गत्यात्मक रहती है। और ये सदैव आगे बढती चली जाती है इसलिए लोक साहित्य को गतिशील एंव ऐतिहासिक विज्ञान स्वीकार किया गया है। इस प्रकार हम लोक साहित्य के माध्यम से समस्त बोली या भाषागत अभिव्यक्तियों का ज्ञान करते है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1189297

राजस्थान लोक गीतों में लोक साहित्य एंव लोक संस्कृति प्रत्येक प्रकार के तीज–त्यौहार रहन–सहन, खान–पान, लोकनृत्य, लोकवाद्यों को सम्मिलित किया जाता है।

राजस्थानी लोकसंगीतों की लोक संस्कृति

''लोक'' शब्द एक बहुत प्राचीन शब्द है ''लोक'' शब्द का अर्थ उस जन समाज से लगाया जाता सकता है जो गहराई से पृथ्वी पर फैला रहता है इस लोक शब्द में सभी जन समुदाय शामिल होते हैं। वर्तमान समय में जब हम ''लोक'' शब्द का प्रयोग करते है तो एक महत्वपूर्ण जन समुदाय की ओर संकेत करता है।

''लोकगीत'' शब्द का अर्थ वास्तव में उस कृति से है जो गाया जाए अथवा गेय हो। इस प्रकार प्राचीन मानव सभ्यता एंव संस्कृति के साथ लोक गीत का सम्बन्ध सदियों से चला आ रहा है। ये लोकगीत व्यक्ति की सामूहिक अभिव्यक्ति को व्यक्त करते है। इन लोकगीतों में गेयता इसका प्रधान तत्त्व होता है। लोकगीत ''लोक'' मानव के सभी प्रकार के भावों को अभिव्यक्ति करती है और इसमें इनकी मौखिक परम्पराएं भी जीवित रहती है।

"एफ विलियम के मतानुसार"–

Folk Song is neither new nor old it is like a forest tree with its roots deeply buried in the past, but which continually puts forth new branches new leaves new fruits.

अर्थात लोकगीत न पुराना होता है नया वह जंगल के वृक्ष जैसा है जिसकी जड़े पूरे जमीं में धँसी हुई है, परन्तु जिसमें निरन्तर नई–नई डालियाँ पल्व (पत्तें) और फल लगते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते है कि लोकगीतों में मानव की सभी प्रकार की भावनाओं, हर्ष, उल्लास शोक–विषाद, प्रेम–ईर्ष्या, भय–आशंका, घृणा, ग्लानि, आश्चर्य, विस्मय भक्ति, निवृत्ति आदि का सरल रूपों में दर्शन होता है। लोकगीतों में किसी भी प्रकार का कोई बन्धन नहीं होता। ये अपनी आप में उन्मुक्त होते हैं, ये लोकगीत व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक जुड़े रहते है। इस प्रकार इन लोकगीतों में व्यक्ति के लोक संस्कृति के सारत्भ और व्यापक भावों के स्वच्छ एवं स्वाभाविक दर्शन देखने को मिलते है।

राजस्थान के लोक गीत संस्कृति के परिचायक है। ये लोकगीत तीज–त्यौहार से लेकर विभिन्न पारिवारिक संस्कारों, उत्सवों आदि अवसरों पर भाव भिभोर होकर गाये जाते है। इन लोकगीतों में राजस्थान के रीति–रिवाज, वेशभूषा खान–पान, मूल–विश्वास, पर्व–उत्सव, लोक–दर्पण आदि को देखकर हमें यहाँ की जानकारी प्राप्त होती है।

राजस्थानी लोक संगीत के निम्नलिखित दो रूप प्रचलित है

प्रथम कोटि के लोक संगीत में वे लोकगीत आते है जो जन साधारण के द्वारा विभिन्न अवसरों पर गाये जाते हैं तथा दूसरी कोटि में वे लोकगीत आते हैं जो व्यवसायिक के द्वारा गाये जाते है।

इन लोकगीतों में हमें राजस्थान की लोक संस्कृति के दर्शन होते है उनका निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1189297

संस्कार सम्बन्धी लोकगीत

वाधावा, चाक, भारत, जरतगा, हल्दी, घोड़ी आदि संस्कार सम्बन्धी प्रमुख लोकगीत राजस्थान में बच्चे के जन्म से लेकर उसके बड़े होने तक कई प्रकार के अवसरों पर गाये जाते हैं। ये लोकगीत विवाह शादियों में औरतों द्वारा प्रदर्शित किये जाते हैं तथा इनमें गृहस्थ जीवन की कई सुन्दर झाकियाँ देखने को मिलती हैं।

नृत्य सम्बन्धी लोकगीत

त्यौहार–पर्वो पर किये जाने वाले नृत्यों में विभिन्न जातियों द्वारा विभिन्न प्रकार के लोकगीत गाये जाते हैं। यह लोकगीत राजस्थान की लोक संस्कृति का पूर्णता व्यक्त करता है।

व्यवसायिक जातियों के लोकगीत

राजस्थान में अनेक जातियाँ अपनी जीविका चलाने के लिये इन लोकगीतों को गाती है। ये लोकगीत विवाह–त्यौहार आदि अवसरों पर गाये जाते है, जिससे लोगों का मनोरंजन भी किया जा सके तथा व्यक्ति अपनी जीवन यापन के लिए धन भी अर्जित कर सकें। इन लोकगीतों में क्षेत्रीय परिवेश स्थिति व भावों के अनुरूप गीतों के साथ–साथ लोक वाद्यों का प्रयोग भी किया जाता है।

भील जाति के लोकगीत

भील जाति के लोगों का जीवन नृत्य, गीतों एवं हास्य विनोद से परिपूर्ण होता है। भीलों के लोकगीतों में उनकी जीवन की पद्धति एवं संस्कृति के पूर्णता दर्शन होते हैं। भीलों के द्धारा ये लोकगीत सहज रूप में सैंकड़ों वर्षों से जन–मन–रंजन का सशक्त माध्यम बना हुआ है।

ये सभी लोकगीत राजस्थान की लोक संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार राजस्थान के लोकगीतों में लोक संस्कृति को पूर्णता देखा जा सकता है। यहाँ के लोकगीतों में लोक संगीत के महत्वपूर्ण अंग होते हैं इन लोकगीतों में माधुर्य के साथ – साथ वातावरण निर्माण एवं भावाभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाने की शक्ति होती है। अतः राजस्थान के लोकगीत यहाँ के परिवेश स्थिति व भावों के अनुरूप ढलकर राजस्थान की लोक संस्कृति का महत्व बड़ाते हैं।

राजस्थान की लोक संस्कृति को प्रोत्साहन देने में निम्नलिखित संस्थाऐं अत्यधिक योगदान दे रही हैं। उनके नाम है, जवाहर कला केन्द्र जयपुर, पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर, राजस्थान संगीत अकादमी जोधपुर आदि।

इस प्रकार से हम राजस्थान के लोक संगीत के सन्दर्भ में कह सकते हैं कि जन समुदाय के सारे क्रियाकलापों तथा उनमें बसे संगीत अभिनय, नृत्य तथा वाद्यों में अपनी लोक संस्कृति को पूर्ण रूप से देखा जा सकता है और हम कह सकते हैं, कि भविष्य में हमारी लोक संस्कृति में लोकगीतों का भविष्य उज्जवल रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] शर्मा, राम, लोक साहित्य का सामाजिक–सांस्कृतिक अध्ययन, निर्मल पब्लिकेशन्स, गंगा विहार, दिल्ली, 2000, पृ0 सं0 32

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1189297

[2] नेगी, संजीव, डोभाल, कुसुम, लोक साहित्य के सिद्धान्त और गढवाली लोक साहित्य का सन्दर्भ, सूर्य प्रकाश श्रीवास्तव नवराज प्रकाशन, दिल्ली, 2006, पृ0 सं0 7

[3] पाण्डे, राम, राजस्थान की लोककला, बी–424 मालवीय नगर, जयपुर 2010, पृ0 सं0 115

[4] भटनागर, धर्मेन्द्र, सिंघल, पी0 के0 राजस्थान 2004, वार्षिक सन्दर्भ ग्रन्थ, किरण प्रकाशन, जयपुर, 2004, पृ0 सं0 615

*Corresponding author.
E-mail address: saraswatichaturvedi@ outlook.com